47. 9

NUMP

न तथा तेन तथामि यथा राजंस्त्रयाऽद्य वै। ग्रटणु चेदं वचा मद्यं मत्येन वदतः प्रभा ।

इष्टापूर्त्तन दानेन धर्मेण मुक्रतेन च। श्रद्याद्यं मर्व्यपञ्चालान् वामुदेवस्थ पश्यतः ।

सर्व्यापायिद्दिं नेव्यामि प्रेतराजनिवेशनं । श्रनुज्ञान्तु मद्याराज भवानी दातुमर्द्धि ।

इति श्रुला तु वचनं द्रे एणपुत्रस्य कीरवः । मनमः प्रीतिजननं कृषं वचनमत्रवीत् ।

श्राचार्थ्य श्रीमं कलमं जलपूर्णं ममानय । स तदचनमाज्ञाय राज्ञाः त्राम्यण्यत्तमः ।

कलमं पूर्णमादाय राज्ञोऽन्तिकमुपागमत् । तमत्रवीनाहाराज पुत्रत्व विश्वासते ।

ममाज्ञया दिजश्रेष्ठ द्रे एणपुत्रोऽभिविच्यतं । सेनापत्येन भद्रने मम चेदिच्छिष प्रयं ।

राज्ञो नियोगाधोद्धयं त्राम्नुणेन विशेषतः । वर्त्तता चल्रधर्भेण च्रेवं धर्मावदे विदुः ।

राज्ञात्त वचनं श्रुला क्षपः शारदतस्ततः । द्रौणिं राज्ञो नियोगेन सेनापत्येऽभ्यमेचयत् ।

सोऽभिषित्रो महाराज परिष्यच्य नृपोत्तमं । प्रययो सिंहनदिन दिशः सर्व्या विनादयन् ।

दुर्व्याधनोऽपि राजेन्द्र शोणितेन परिभृतः । तां निशां प्रतिपेदेऽय सर्वस्थतमयावहां ।

श्रपक्रस्य तु ते द्वर्णं तस्मादायोधनान्तृप । शोकभविग्रमनस्थिनाप्याभिषेके परपष्टाऽध्यायः ॥ ६६ ॥

॥ समाप्तसेदं श्रख्यपर्वे॥ ॥

जागारक महिला के निर्मा के लिया है जिस्सा निर्मा के लिया है है जिस्सा महिला है है जिस्सा महिला है है जिस्सा महिला है है जिस्सा महिला है जिस्सा के लिया है जिस्सा है जिया है जिस्सा है जिया है जिस्सा है जिया है जिस्सा है जिया है जिस्सा है जिया है जिस्सा है जिया है जिस्सा है जिया है जिस्सा है जिस है जिया है जिस है जिय है जिस है ज

ना सबनी से स्वासित के महिल्ला कि सित्त के नित्त के स्वासित स्वासित स्वासित स्वासित स्वासित स्वासित स्वासित स्

व अवा कश्रमाति की की विश्व में विश्व में

प्रकात विकास मिला है कि है कि है कि है कि है कि है कि से बार के साथ है कि से बार कि कि है कि है कि से बार कि है कि है कि है कि से बार कि है कि है कि से बार कि है क

क्रीमिक मोचिम जन्मान यथा विजिन्तिक्षी व से क्षायनसामित पार्थि प्राणि प्राणि मिणीय स ।

वान्यविक्रमणा वाचा रावानमिद्शावीत्। पिता ने निर्ताः पुरे समुबंबेत् मर्मावा ।

84 g